



[लोगोस बाइबल अध्ययन सेवकाई]

# लोगोस बाइबल प्रतियोगिता मॉड्यूल: 4

वेबसाइट: <https://logosinhindi.com/>

ईमेल: logosinhindi@gmail.com

## विषय- सूची

Chapter 1: भाग्यविधाता परमेश्वर और जिम्मेदार मनुष्य

Chapter 2: क्या यीशु मसीह हमें धनवान बनाने के लिए मरा?

Chapter 3: परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेना क्या होता है?

Chapter 4: प्रश्न: यीशु मसीह ने तो कभी कोई पाप नहीं किया फिर उसने बपतिस्मा क्यों लिया? और जब यूहन्ना ने मना किया तो उसने क्यों कहा की सारी धार्मिकता को पूरा होने के लिए ऐसा ही होने दे. यीशु मसीह कौनसी धार्मिकता पुरी कर रहा था?

Chapter 5: The Doctrine of Limited Atonement सीमित प्रायश्चित्त की शिक्षा/सिद्धांत:

## Chapter 1: भाग्यविधाता परमेश्वर और जिम्मेदार मनुष्य

भाग्यविधाता परमेश्वर और जिम्मेदार मनुष्य

परमेश्वर कि सम्प्रभुता और मनुष्य कि जिम्मेदारी

[सुसंगतता की शिक्षा (Compatibilism)]



परमेश्वर सम्प्रभु परमेश्वर हैं. परमेश्वर की सम्प्रभुता का अर्थ होता है की इस सृष्टि में जो कुछ भी होता है वो सब उसी की योजना के अनुसार होता है. आदम ने जब वर्जित फल को खाया तो परमेश्वर को कोई आश्चर्य नहीं हुआ. आदम ने जो किया वो परमेश्वर की योजना के बाहर नहीं था, परन्तु आदम पूरी तरह अपने पाप के लिए जिम्मेदार था. आपको विश्वास नहीं होता तो आप आगे पढ़िए:

*हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का सामना करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है, "तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?" क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं कि एक ही लोदे में से, एक बर्तन आदर के लिये और दूसरे को अनादर के लिये बनाए? कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की, जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही। और दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये पहिले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा की. (रोमियों 9:20-23)*

इन आयतों में हम पाते हैं कि परमेश्वर ने यह ब्रम्हांड और मनुष्य अपनी महिमा के लिए बनाए है (रोमियो 11:36) । वह चाहता है कि उनकी दया और न्याय दोनों के लिए उसकी महिमा हो। वो अपनी दया के लिए महिमा मुट्टी भर लोगों को (जिनको उन्होंने संसार की उत्पति से पहले से ही चुन लिया था) बचाने के द्वारा लेता है और न्याय के लिए महिमा पापियों को उनके पाप की वजह से नरक में सजा देकर लेगा.

और भी आयते देखिये:

*"जो (परमेश्वर) अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है." (इफिसियों 1:11)*

परमेश्वर की सम्प्रभुता का मतलब है की वह सब कुछ अपनी अनंत और पवित्र बुद्धि में निर्धारित करता है. वह प्रतिक्रिया नहीं करता; वह सब कुछ निर्धारित करता है.

*"मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ मेरी योजना स्थिर रहेगी और मैं अपनी (संप्रभु) इच्छा को पूरी करूँगा।" (यशायाह 46:10)*

परमेश्वर ने अंत की बातों की घोषणा शुरुवात से ही कर दी और उसने कहा मेरी योजना स्थिर रहेगी और मैं अपनी संप्रभु इच्छा को पूरी करूँगा. इस आयत का मतलब यह है कि आदम ने जब फल खाया और मनुष्य परमेश्वर कि महिमा से गिरा तब परमेश्वर कि योजना स्थिर थी और उसी कि संप्रभु इच्छा के अनुसार यह हो रहा था.

*क्या यह भाग्य-निर्धारण परमेश्वर को हमारे पापों के लिए जिम्मेदार नहीं बना देता?*



नहीं, बिल्कुल नहीं! परमेश्वर पवित्र पवित्र पवित्र हैं ( यशा 6:3 ) वह ज्योति है, उसमे कुछ भी अंधकार नहीं ( 1 यूहन्ना 1:5 ). पाप करना परमेश्वर के लिए असंभव है. परमेश्वर की कभी भी पाप ना कर सकने की योग्यता ही उसे झूठे ईश्वरों से पृथक करती है। परमेश्वर ना ही प्रत्यक्ष और ना ही अप्रत्यक्ष रूप से पाप के लिए जिम्मेदार है. ना तो कोई उसे पाप का प्रलोभन दे सकता ही न ही वो किसी को. हमारे प्रलोभन में पड़ने और पाप करने के लिए शैतान और हम पूरी तरह से जिम्मेदार हैं ( याकूब 1:13)। अगर आपको परमेश्वर की पवित्रता पर जरा भी संदेह है तो क्रूस पर निगाह डालिए। वे धार्मिकता से इतना प्रेम करता है कि उसने अपने कुछ चुने हुओं को न्याय (नरक) से बचाने के लिए अपने इकलौते पुत्र को ही नरक पिला दिया अर्थात चुने हुओं के बजाय की सजा दे दी।

समझने का प्रयास कीजिये: परमेश्वर की संप्रभुता (हर चीज का भाग्य निर्धारण करने का गुण) और मनुष्य का जिम्मेदार होना असंगत ( परस्पर विरोधी) नहीं हैं। परमेश्वरीय वास्तविकता में परमेश्वर का किसी चीज का पूर्व निर्धारण करना और फिर भी मनुष्य का अपने पापों के प्रति जिम्मेदार होना संभव है। आईए हम इसे बाइबल में से कुछ उदाहरणों के द्वारा देखते हैं:

**1. यूसुफ के भाइयों** ने उसे खड्डे में डाला और फिर बेच दिया। बाद में वो पोतीपर के घर में दास बन कर रहा, उस पर झूठा इल्जाम लगाकर उसे कैदखाने में डाल दिया गया और फिर एक दिन परमेश्वर उसे मिश्र देश का दूसरा सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बना देता है और जब अकाल के दौरान उसके भाई मिश्र देश में आते हैं और उसे पहचानने के बाद उस से डर जाते हैं की अब ये हमे मार डालेगा, तब यूसुफ कहता है:

*" परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसलिए भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े।"*

*(उत्पत्ति 45:7)*

यूसुफ के अनुसार परमेश्वर ही उसे मिश्र देश में लाया. तो क्या परमेश्वर ने यूसुफ के भाइयों से पाप करवाया? नहीं ! उसने तो सिर्फ पाप को निर्धारित किया कि यह होगा. उसके भाई स्वयं ही जिम्मेदार थे अपने पापों के लिए।

## **2. और यहोवा का क्रोध इस्राएलियों पर फिर भड़का और उसने दाऊद को इनकी हानि के लिये यह कहकर उभारा कि इस्राएल और यहूदा की जनगणना करवाए। (2 शमूएल 24:1)**

हम जानते हैं कि दाऊद के जनगणना करवाने से क्रोधित होकर परमेश्वर ने इजराइल को भयंकर दंड दिया और बड़ी संख्या में लोग मर गए थे. परन्तु 2 शमूएल 24:1 हम को अचम्भे में डाल देता है कि दाऊद को भड़काया भी तो परमेश्वर ने ही था. तो क्या परमेश्वर ने दाऊद से पाप करवाया और फिर दंड भी दिया. नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है? परमेश्वर तो ज्योति है उसमे कुछ भी अंधकार नहीं ( 1 यूहन्ना 1:5 ) और वह पाप के लिए न तो प्रत्यक्ष रूप से ना ही अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार है ( याकूब 1:13). तो फिर क्यों लिखा है कि यहोवा ने ही उसे भड़काया या उभारा कि वह जनगणना करवाए? क्योंकि परमेश्वर पाप का निर्धारण करता है. कोई पाप भी उसकी योजना के बाहर नहीं कर सकता. निम्न आयतों में देखिये कि दाऊद के जनगणना करवाने के पाप के लिए कौन जिम्मेदार है:

*और शैतान ने इस्राएल के विरुद्ध उठ कर, दाऊद को उकसाया कि इस्राएलियों की जनगणना करवाए। (1 इतिहास 21:1)*

*प्रजा की गणना करने के बाद दाऊद का मन व्याकुल हुआ। और दाऊद ने यहोवा से कहा, यह काम जो मैंने किया वह महापाप है। तो अब, हे यहोवा, अपने दास का अधर्म दूर कर; क्योंकि मुझ से बड़ी मूर्खता हुई है।(2 शमूएल 24:10)*

1 इतिहास 21:1 में हम देखते हैं कि दाऊद को शैतान ने भड़काया और 2 शमूएल 24:10 में हम देखते हैं कि दाऊद अपने पाप कि जिम्मेदारी खुद लेता है.

अब आप समझ गए होंगे कि परमेश्वर भाग्य विधाता है और जो कुछ भी हो रहा है उसकी योजना के अंतर्गत हो रहा है, परन्तु मनुष्य स्वयं पूरी तरह जिम्मेदार है.

**3. अशूर पर हाथ, जो मेरे क्रोध का लठ और मेरे हाथ में का सोंटा है! वह मेरा क्रोध है। मैं उसको एक भक्तिहीन जाति के विरुद्ध भेजूंगा, और जिन लोगों पर मेरा रोष भड़का है उनके विरुद्ध उसको आज्ञा दूंगा कि छीन छान करे और लूट ले, और उन को सड़कों की कीच के समान लताड़े। (यशायाह 10:5-6)**

इस आयत के अनुसार परमेश्वर ने अशूर को इजराइल को उसके पाप के कारण नाश करने के लिए भेजा. लेकिन निम्न लिखित आयतों को देखिये:

*इस कारण जब प्रभु सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब मैं अशूर के राजा के गर्व की बातों का, और उसकी घमण्ड भरी आंखों का पलटा दूंगा।*

*उसने कहा है, अपने ही बाहुबल और बुद्धि से मैंने यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूँ; मैंने देश देश के सिवानों को हटा दिया, और उनके रखे हुए धन को लूट लिया; मैंने वीर की नाई गद्दी पर विराजनेहारों को उतार दिया है। (यशायाह 10:12-13)*

पहले तो परमेश्वर खुद भेजता है नाश करने के लिए और फिर दंड भी देता है. ऐसा क्यों? क्योंकि अशशूर परमेश्वर कि सम्प्रभुता में तो इजराइल के खिलाफ आता है, परन्तु उसका उद्देश्य परमेश्वर कि महिमा नहीं होता बल्कि अपनी ही बड़ाई होता है. अशशूर अपने पाप के लिए पूरी तरह जिम्मेदार है.

**4. उसी को जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़ाया गया, तो तुम ने अधमियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वा कर मार डाला। (प्रेरितों 2:23)**

**और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला. (प्रेरितों 3:15)**

**क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिस तू ने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस भी अन्य जातियों और इस्त्राएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए।**

**कि जो कुछ तेरे हाथ (तेरी सामर्थ) और तेरे उद्देश्य ने पूर्वनिर्धारित किया था वही करें। (प्रेरितों 4:27-28)**

उपर्युक्त आयतों के अनुसार, प्रभु यीशु कि मृत्यु परमेश्वर के पूर्व-निर्धारण के द्वारा ही थी, लेकिन मनुष्य खुद उसको मारने के लिए जिम्मेदार थे: “तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला.” (प्रेरितों 3:15).

**5. और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था, इसलिए कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलानेवाले के कारण बनी रहे। (रोमियों 9:11)**

**सो वह जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर देता है। (रोमियों 9:18)**

रोमियों 9:11 में हम देखते हैं कि परमेश्वर याकूब को उद्धार के लिए उसको बनाने से पहले ही चुन लेता है और एसाव को विनाश के लिए छोड़ देता है. रोमियों ९:१८ में हम पाते हैं कि जिसको चाहता है उस पर दया करके उद्धार का दान दे देता है और बाकि लोगों को उनके पाप के वश में और कठोर होकर नरक जाने के लिए छोड़ देता है.लेकिन अगले ही अध्याय में वो जिम्मेदार किस को ठहरता है? देखिये:

**में सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा न मानने वाली और विवाद करने वाली प्रजा की ओर पसारे रहा॥ (रोमियों 10:21)**

जी हाँ परमेश्वर ने भाग्य निर्धारण कर रखा है, लेकिन परमेश्वर के निमंत्रण को ना स्वीकारने के लिए और उसके पास न आने के लिए मनुष्य खुद जिम्मेदार है.

**6. यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे, तब तो परमेश्वर उसका न्याय करेगा; परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे, तो उसके लिये कौन बिनती करेगा? परन्तु उन्होंने (एली के बच्चों ने) अपने पिता की बात न मानी; क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी। (एक शमूएल 2:25)**

एली के बच्चों ने उनके पिता कि बात क्यों नहीं मानी? क्योंकि यहोवा कि इच्छा उन्हें मार डालने की थी. तो क्या यहोवा उनके पाप के लिए जिम्मेदार है? नहीं, कदापि नहीं. लेकिन यहोवा जिस पर दया करना चाहे उस पर दया करता है और जिसे कठोर करना चाहे उसे उसके पाप के वश में कठोर होने के लिए छोड़ सकता है (रोमियों

९:१८).तो इसका मतलब यह हुआ कि यहोवा ने उनके पाप को और उनको मार डालना निर्धारित किया, लेकिन वे स्वयं इसके लिए जिम्मेदार थे.



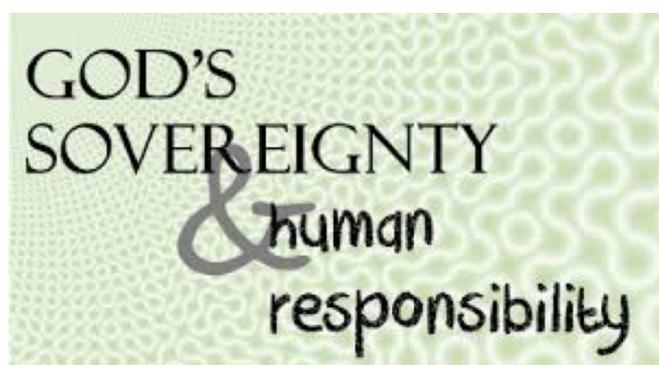
*7. जो कुस्रू के विषय में कहता है, वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा; यरूशलेम के विषय कहता है, वह बसाई जाएगी और मन्दिर के विषय कि तेरी नेव डाली जाएगी॥*

*अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित्त मैं ने नाम ले कर तुझे बुलाया है; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं ने तुझे पदवी दी है।*

*मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं तेरी कमर कसूंगा. (यशायाह 44:28; 45:4-5)*

यिर्मयाह 29:10 के अनुसार, परमेश्वर ने इज़राइल से वादा किया था कि सत्तर साल बाद वह उनको फिर से आबाद करेगा. यशायाह कि उपर्युक्त आयतों में हमने देखा कि परमेश्वर कुस्रू राजा के द्वारा यह काम करवाएगा. यशायाह ४५:५-६ के अनुसार, कुस्रू राजा यहोवा परमेश्वर को जानता भी नहीं, लेकिन फिर भी वह वही सब कर रहा है जो यहोवा चाहता है. वह अपने हिसाब से काम कर रहा है परन्तु परमेश्वर कि इच्छा और योजना उसमे पूरी हो रही है. वह अपने काम के लिए जिम्मेदार है परन्तु यह सब परमेश्वर ने ही पूर्वनिर्धारित कर रखा था.

*निष्कर्ष*



ऐसी और भी सैकड़ों उदहारण बाइबल में से दिए जा सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर की सम्प्रभुता बाइबल कि हर आयत में है, बस देखने कि आँखे होनी चाहिए. निष्कर्ष के लिए दो-तीन आयतें और देखिये:

*मनुष्य के कदम यहोवा की ओर से दृढ़ होते हैं. (भजन 37:23)*

इस आयत के अनुसार मनुष्य जो भी अच्छा या बुरा करता है, वो सब यहोवा कि ओर से पूर्वनिर्धारित है.

*यदि यहोवा ने आज्ञा न दी हो, तब कौन है कि वचन कहे और वह पूरा हो जाए?*

*अच्छा और बुरा, क्या दोनों परमप्रधान की आज्ञा से नहीं होते? (विष्णुगीत 3:38)*

*मैं उजियाले का बनाने वाला और अन्धियारे का सृजनहार हूँ. मैं अच्छाई और बुराई को रचता हूँ. मैं यहोवा ही इन सभी का कर्ता हूँ। (यशायाह 45:7)*

उपर्युक्त दोनों आयतों में भी परमेश्वर भलाई-बुराई और धार्मिकता-अधार्मिकता की जिम्मेदारी ले रहा है. किस अर्थ में? स्पष्ट रूप से इस अर्थ में नहीं कि वो पाप का रचियता है, क्योंकि उसमे से पाप निकलना असंभव है. वह पवित्र पवित्र पवित्र है ( यशा 6:3 ). वह ज्योति है, उसमे कुछ भी अंधकार नहीं ( 1 यूहन्ना 1:5 ). वह ना तो प्रत्यक्ष और ना ही अप्रत्यक्ष रूप से पाप के लिए जिम्मेदार है. ना तो कोई उसे पाप का प्रलोभन दे सकता है, न ही वो किसी को. हमारे प्रलोभन में पड़ने और पाप करने के लिए शैतान और हम पूरी तरह से जिम्मेदार हैं ( याकूब 1:13)। फिर किस अर्थ में परमेश्वर अच्छाई-बुराई और धार्मिकता-अधार्मिकता कि जिम्मेदारी ले रहा है? इस अर्थ में कि वह इन सब को पूर्व निर्धारित करने वाला संप्रभु परमेश्वर है. फिर से याद दिला दूँ, मनुष्य खुद अपने पाप के लिए पूरी तरह जिम्मेदार है. परमेश्वर की संप्रभुता (हर चीज का भाग्य निर्धारण करने का गुण) और मनुष्य का जिम्मेदार होना असंगत (परस्पर विरोधी) नहीं हैं। परमेश्वरीय वास्तविकता में परमेश्वर का किसी चीज का पूर्व निर्धारण करना और फिर भी मनुष्य का अपने पापों के प्रति जिम्मेदार होना संभव है। जैसा कि हमने ऊपर विस्तार से देखा.

## Chapter 2: क्या यीशु मसीह हमें धनवान बनाने के लिए मरा?



**तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ। (2 कुरिन्थियों 8:9)**

बैनी हिन्, क्रेफलो डॉलर, जोसफ प्रिंस, जॉयस मायर, पॉल दिनाकरन, अंकुर नरूला, पी जी वर्धिस आदि समृद्धि गॉस्पेल के प्रचारक इस आयत को लेके कहते हैं की देखो यीशु मसीह हमें अमीर बनाने के लिए कंगाल हुआ या मरा । आइये देखते हैं की इसका मतलब क्या है । इस आयत में हम निम्नांकित चीज़े देखते हैं:

1. यीशु मसीह स्वर्ग में धनवान था ।
2. वो पृथ्वी पर आके कंगाल हुआ ।
3. वो कंगाल इसलिए हुआ ताकि उसकी कंगाली से हम धनवान बन जाये ।
4. उसने हमारे खातिर जो खोया\*\* है वो हमें मिल जायेगा ।

अब प्रश्न उठता है वो स्वर्ग में किन चीज़ों का धनी था और उसने पृथ्वी पे आके क्या खोया । इस प्रश्न का उत्तर देना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि उसने जो खोया है वही तो हमें मिलेगा । क्या उसके पास स्वर्ग में बँगला, गाड़ी, बैंक बैलेंस, सोना-चांदी, वस्त्र और शारीरिक समृद्धि आदि थे? नहीं । क्योंकि परमेश्वर को इन सब चीज़ों की आवश्यकता नहीं. वह तो स्वयं-पर्याप्त (self sufficient ) है । सब कुछ उसी का है परन्तु उसे हमारी तरह जीने के लिए इस ब्रह्ममाण्ड और इसमें की किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं । जब उसके पास स्वर्ग में ये सब चीज़े नहीं थी तो उसने पृथ्वी पे आके इनको नहीं खोया और जब पृथ्वी पे आके इनको नहीं खोया तो हमें इस आयत के अनुसार ये सब चीज़े देने का वादा नहीं है । क्योंकि जो चीज़े उसने हमारे लिए नहीं त्यागी वो चीज़े हमें देने का वादा कैसे इस आयत में हो सकता है? मैं ये नहीं कह रहा की परमेश्वर पृथ्वी पर हमारी आवश्यकताएं पूरी नहीं करता । हाँ, वो आवश्यकताएं पूरी करता है लेकिन उसने कहीं भी हमें अमीर बनाने का या हमारी सारी इच्छाओं और लालच को पूरा करने का वादा नहीं किया ।

आइये देखते हैं उसने पृथ्वी पे आके क्या खोया. उसने बहुत कुछ खोया. जैसे सृष्टिकार परमेश्वर और इस दुनिया का मालिक होकर भी वह दास बन गया \*\*\*\* (फिलिप्पीओं 2:5-8) । लेकिन हम इस पर ध्यान केंद्रित नहीं करेंगे, क्योंकि यहाँ उसके और हमारे बीच में अदला बदली (एक्सचेंज) संभव नहीं । वह पृथ्वी पर दास बन गया का मतलब यह कभी नहीं हो सकता की हम परमेश्वर या इस ब्रह्माण्ड के मालिक बन जायेंगे । लेकिन हम उन ही चीज़ों पर अभी अपना ध्यान केंद्रित करेंगे जिनका यीशु मसीह और हमारे बीच में अदला बदली (एक्सचेंज) हो सके ।

1. उसने स्वर्ग की महिमा को खोया । (फिलिप्पीओं 2:5-8)

2. उसने क्रूस पर पिता को खोया । (मत्ती 27:46)

3. धर्मी होकर भी क्रूस पर पाप बन गया (वह क्रूस पर पापी नहीं बना, पाप बना अर्थात उसने हमारे पाप उठा लिए और परमेश्वर पिता ने हमारा नरक उसे पिला दिया । ) (2 कोरिन्थियों 5:21)

**उसने ये चीज़े खोई तो हमे इस आयत के हिसाब से क्या मिलेगा:**

1. उसने हमारे खातिर स्वर्ग की महिमा खोई इसलिए हमे वह स्वर्ग की महिमा में ले जायेगा । (रोमियों 8:30)

2. उसने क्रूस पर पिता को खोया, इसलिए हमारा पिता से रिश्ता जुड़ गया । (इफिसियों 2:18)

3. वह धर्मी होकर भी क्रूस पर पाप बन गया इसलिए आज हम उसके द्वारा परमेश्वर की नज़रों में धर्मी ठहरे । (2 कोरिन्थियों 5:21)

उसने स्वर्ग छोड़ कर गाडी, बँगला, और भौतिक समृद्धि नहीं खोई की हमे इस आयत के अनुसार ये सब मिल जायेगा. यह एक झूठी शिक्षा है । अमीर तो हमे शैतान भी बना सकता है । याद करें **मत्ती 4:9** में शैतान ने यीशु मसीह को दुनिया की सारी संपत्ति देने का प्रलोभन दिया था यदि वो उसको दंडवत करे तो। आज कई झूठे शिक्षक बहुत अमीर हैं क्योंकि वो नाम तो यीशु मसीह का लेते हैं लेकिन सेवा अपने पिता शैतान की करते हैं । उनका पिता उन्हें इनाम में धन दौलत देता है । हमारा पिता तो हमे समय-समय पर दुःख देकर हमारा पवित्रीकरण करता है ।

अमीर और गरीब की बात आई तो याकूब ने हमे सिखाया की परमेश्वर ने गरीबों को विश्वास में धनी होने और परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होने के लिए चुना:

*हे मेरे प्रिय भाइयों सुनो; क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी, और उस राज्य के अधिकारी हों, जिस की प्रतिज्ञा उस ने उन से की है जो उस से प्रेम रखते हैं ।*

**(याकूब – अध्याय 2:5)**

अगर यीशु मसीह अमीर बनाने के लिए मरता तो याकूब की कलीसिया में सब अमीर होते. वहां वो झूठे शिक्षकों की तरह ये नहीं कह रह था की अमीरी को क्लेम करो और पा लो । उसने कहा परमेश्वर ने गरीबों को विश्वास में अमीर होने के लिए चुना है ।

पौलुस **2 कोरिन्थियों 8** अध्याय में सिखा रहा है की जैसे यीशु मसीह ने स्वर्ग छोड़ दिया अपने चुने हुए लोगों के लिए वैसे ही तुम भी अपनी बढ़ौतरी और घटी दोनों में से त्याग पूर्वक मसीह की देह के लिए दान देते रहो । ये ज़रूरी क्यों हैं, क्योंकि जो मसीह ने अपनी देह (कलीसिया) के लिए खोया वो यदि

हमें मिल गया, तो हम भी उसी देह के लिए त्याग करके दान करेंगे। ये आयत झूठी समृद्धि गॉस्पेल प्रचारक जो सीखाते हैं ठीक उसका उल्टा बोल रही है।

ये कह रही है की हमें मसीह की देह के लिए सब कुछ त्यागने और कंगाल होने के लिए भी तैयार होना चाहिए, जैसा की यीशु मसीह ने किया स्वर्ग त्याग कर। पौलुस ने भी ऐसा ही किया। वह फरीसी था, अमीर था, इज़्जतदार था, प्रसिद्ध था। लेकिन वो हमें **फिलिप्पीओं 3:8-9** में कहता है की उसने अपने फरिसीपने, अपने पद, अपनी इज़्जत, शौहरत और अपने धन-दौलत सब को कूड़ा करकट समझा ताकि वो मसीह की धार्मिकता को पा जाये, उसके साथ दुःख उठाये और उसकी समानता में ढल जाये (**फिलिप्पीओं 3:10-11**).

मैं आप से पूछता हूँ क्या परमेश्वर ने पौलुस, पतरस, यूहन्ना और उसके किसी चेले को भौतिक सुख सुविधाएं या अमीरी दी? क्या उन्होंने कभी पॉल दिनाकरन, पॉल योंगे चु. जोसफ प्रिंस की तरह अपने साम्राज्य (एम्पायर) खड़े किये? नहीं। पहली शताब्दी की कलीसिया में क्या अमीर बनाने की शिक्षा दी जा रही थी? नहीं। हम देखते हैं की वो लोग सब कुछ त्याग कर, अपनी संपत्ति को बेच कर पैसा लाकर प्रेरितों को दे रहे थे (**प्रेरितों 4:34**). ताकि वो आत्मिक रूप से बढ़े, भले ही भौतिक रूप से कमतर हो जाये। वो जानते थे की हमको पृथ्वी पर धन इकठ्ठा नहीं करना। परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को पूरा करेगा। वो जानते थे की यीशु मसीह उन्हें आत्मिक रूप से अमीर बनाने के लिए खुद क्रूस पर पाप बन गया। ये वो कर रहे थे जो उस अमीर जवान ने नहीं किया था जिसको यीशु मसीह ने कहा था की अपना धन गरीबों में बाँट दे, तुझे स्वर्ग में बड़ा धन मिलेगा (**मरकुस 10:21**)।

ये लोग स्वर्ग में अपना धन इकठ्ठा कर रहे थे (**मति 6:20**) सुसमाचार के प्रचार के लिए पृथ्वी पर अपना सारा धन लुटा कर। **2 कुरिन्थियों 8:9** भी यही कह रही है जैसे मसीह ने सब त्याग दिया अपनी देह के लिए ऐसे ही तुम भी अपनी घटी में से देते रहो। उस धनी व्यक्ति जैसे लोग आज के पासवानों के पास आते हैं तो वो बड़ा दशमांश और बाकी तमाम तरह के अलग-अलग दान लेके नकली क्रिस्चियन बना लेते हैं। उसे अपना इंकार करना नहीं सिखाते। यीशु मसीह के लिए अपने आप का, अपने धन का, अपनी इज़्जत का, अपने लोगों का इंकार करना नहीं सिखाते।

एक और प्रश्न पूछता हूँ। परमेश्वर की योजना पौलुस और 12 में से 11 चैलों के लिए कठिनाईया, बीमारियां (**गलातियों 4:13**), कमजोरिया, दुःख, कष्ट, भूखमरी, नंगापन, सताव, कारावास (**2 कुरिन्थियों 11:23-30**), और सताने वालों के हाथों दर्दनाक मौत मरने की थी। आप को क्यों लगता है की परमेश्वर की योजना आपको इस दुनिया में अमीर, इज़्जतदार, प्रसिद्ध, शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाने की है? क्या आप नहीं जानते की परमेश्वर का अनुग्रह हमारे लिए काफी है (**2 कुरिन्थियों 12:9**) चाहे वो हमारी बिमारी, गरीबी, दुखों से छुड़ाने की प्रार्थना का उत्तर हाँ या नहीं में दे (**1 यूहन्ना 5:24**)। अगर आप किसी भी आयत का संदर्भ से बहार अर्थ ना निकले तो कही भी आप को स्वास्थ्य और अमीरी का वायदा नहीं किया गया है। बस ये है की वो हमारी ज़रूरतों को पूरा करेगा और हर दुःख में हमारे साथ रह कर हम को पवित्र करेगा। ध्यान रहे गॉस्पेल स्वयं पूर्ति (self-fulfillment) का नहीं, स्वयं का त्याग और इंकार करने (self-denial) का है। प्रभु यीशु मसीह ने कहा है :

यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। (मती 16:24)

उपर्युक्त आयत में क्या लिखा है की आप यीशु मसीह के पास संसार की सारी चीज़े पाओगे? नहीं, यहाँ स्पष्ट लिखा है की हमको सारी अभिलाषाओं का इन्कार करना है, यीशु का क्रूस उठाना है और उसके पीछे चलना है। यीशु मसीह इतना योग्य है की उसके लिए सब कुछ छोड़ दिया जाये। अब मैं बताता हूँ की यीशु मसीह के अनुसार उसके पास आने वालों को इस दुनिया में क्या मिलेगा:

1. पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे। ( 2 तीमुथियुस – अध्याय 3:12)

2. और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा कर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। (1 पतरस – अध्याय 2:21)

3. मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीन लिया है। (यूहन्ना – अध्याय 16:33)

उपर्युक्त आयतों में हमने देखा है की हमें दुःख उठाने के लिए बुलाया गया है।

प्रेरितों क काम 9:23 में परमेश्वर कहता है की पौलुस को उसने अपने खातिर बहुत ही दुःख उठाने के लिए बुलाया है।

यूहन्ना 21:18 में यीशु मसीह पतरस से कहता है की तुझे मेरे खातिर क्रूस पर मरना पड़ेगा।

पौलुस 2 तीमुथियुस 2:3 में तीमुथी को दुःख उठाने के लिए प्रेरित करता है। वो ये नहीं कहता की सकारात्मक अंगीकार कर तुझे अमीरी, चंगाई, सेफ्टी मिलेगी।

लेकिन झूठे शिक्षक आप को ये सब नहीं बताएँगे क्योंकि वो मसीहियत को धन कमाने का साधन मानते हैं (1 तीमुथियुस – अध्याय 6:5)

परन्तु पौलुस 1 तीमुथियुस अध्याय 6 की इन आयतों में क्या बोलता है :

आयत 6 पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है।

आयत 7 क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं।

आयत 8 और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए।

आयत 9 पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं।

आयत 10 क्योंकि रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटक कर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है॥

आयत 11 पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग, और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का पीछा कर।

आपका उद्देश्य धनी बनना नहीं होना चाहिए लेकिन धर्मी बनाना होना चाहिए, क्योंकि स्वर्ग में परमेश्वर के अनुग्रह, महिमा और उसकी उपस्थिति का सर्वोत्तम धन रखा है। मेने एक झूठे शिक्षक

को ये कहते सुना, ” भाई, मैं स्वर्ग में धन का क्या करूँगा । मुझे तो यहाँ धन चाहिए , बहुत सपने पूरे करने हैं मुझे ।” ऐसे लोग नरक की ओर बढ़ रहे हैं, क्योंकि उनका ईश्वर धन है ।

यह सब कह कर मैं एक और बात बताना चाहता हूँ । धन अपने आप में बुरा नहीं है लेकिन जब हमारा फोकस मसीह और धार्मिकता से हट कर धन पर आ जाता है और हम लालच करने लग जाते हैं, तो यह बुरा हो जाता है । परमेश्वर अपने कुछ लोगों को धन देता है. लेकिन क्यों? इकठ्ठा करने के लिए? अमीर बननेके लिए? शानो-शौकत से रहने के लिए? नहीं । वो कुछ लोगों को धन इसलिए देता है ताकि वह अपने भाइयों और कलीसिया की ज़रूरत को पूरा करे ।

मैं यह भी कहना चाहता हूँ की बाइबिल कही भी यह नहीं कहती की हम अपने भविष्य की ज़रूरतों के लिए बचत नहीं कर सकते । **नीतिवचन 13: 22** कहता है की *भला मनुष्य अपने नाती- पोतों के लिये भाग (inheritance) छोड़ जाता* । तो हम बचत कर सकते हैं, लेकिन हमे डरते और कांपते हुए ऐसा करना चाहिए । ज़रूरतों के लिए बचत करनी चाहिए: इच्छाओं और भौतिक सुविधाओं के लिए नहीं । ज़रूरतों के लिए बचत करने में और भौतिकता के लिए बचत करने में बहुत बड़ा अंतर है ।

**निष्कर्ष** : यीशु मसीह के पास अमीर बनने, चंगाई पाने, कर्जे से निजात पाने आदि के लिए आना मूर्तिपूजा है । यीशु मसीह के पास यीशु मसीह के लिए आओ । वो इतना प्यारा, इतना खूबसूरत, इतना भला, इतना प्रेमी, इतना आनंददायी, इतना पवित्र, इतना धर्मी , इतना महान, इतना शाही, इतना न्यायी, इतना योग्य है की सारा ब्रह्माण्ड और इसमें के समस्त प्राणी और धन और अपनी जान भी उसके लिए त्याग दिए जाए । यीशु मसीह ने यही तो सिखाया अपने दृष्टांतों में:

**आयत 44** *स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया॥*

**आयत 45** *फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था।*

**आयत 46** *जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया॥ “ (मती अध्याय 13:44-45)*

यीशु मसीह उस धन या उस मोती के सामान है जिसे पाने के लिए सब कुछ खो दिया जाये । और उसके पाने के बाद किसी भी चीज़ की इच्छा ना रहे । धर्मियों का धन यीशु मसीह है । पापियों का धन दुनिया होती है ।

परमेश्वर आप को इस वचन के द्वारा आशीष दे ।

**N. B.** **\*\*यीशु मसीह ने खोया' का मतलब यह नहीं की चीज़े उसके हाथ से चली गई या किसी ने उससे छीन ली । यीशु मसीह ने जो भी खोया वो इसलिए क्योंकि उसने उन्हें अपनी मर्जी से त्यागा। मेने 'खोया' शब्द अपनी बात को आसानी से समझाने के लिए उपयोग किया है ।**

**\*\*\*\* यीशु मसीह पृथ्वी पर दास बन गया इसका मतलब यह नहीं की उसने परमेश्वरत्व को त्याग दिया । ये असम्भव है । वो पृथ्वी पर भी उतना ही परमेश्वर था जितना स्वर्ग में । जब यीशु मसीह ने**

अवतार लिया तो उसने अपने परमेश्वरत्व में मनुष्यत्व भी जोड़ लिया । वो आज पूरी तरह से परमेश्वर भी है और पूरी तरह से मनुष्य भी ।

## Chapter 3: परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेना क्या होता है?

---

तीसरी आज्ञा कहती है:

“तू अपने प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ ना लेना. जो कोई उसका नाम व्यर्थ लेगा उसे वो किसी रीती से निर्दोष नहीं ठहराएगा.”

परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेने का अर्थ क्या है? मूल भाषा में “लेने” के लिए जो शब्द इस्तेमाल किया गया है वो है “नासा”. जिसका अर्थ सिर्फ “लेना” ही नहीं होता बल्कि “धारण करना” या “प्रतिनिधित्व करना” भी होता है. सभी बाइबल विद्वान मानते हैं की तीसरी आज्ञा सिर्फ परमेश्वर के नाम को व्यर्थ बोलने को ही वर्जित नहीं करती, बल्कि उसके नाम का गलत प्रतिनिधित्व करने को भी वर्जित करती है. इस अर्थ के अनुसार कोई सी भी चीज़ जो हम बाइबल के विपरीत करते हैं, वो सब तीसरी आज्ञा का उल्लंघन है.

1. यदि कोई बहार से तो मसीही कहलाये पर उसकी ज़िन्दगी पापमय हो तो वह परमेश्वर के नाम को गलत ले रहा है.



2. यदि कोई मसीही कहलाये और झूठ बोले, जालसाजी करे, धोखा धड़ी करे तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेता है.

3. पुराने नियम में यदि कोई परमेश्वर के नाम की झूठी कसम खाता था तो वो परमेश्वर के नाम को व्यर्थ लेता था.

4. नए नियम में हमें कुछ खास कानूनी परिस्थितियों के अलावा हमारी दैनिक ज़िन्दगी में कसम खाना वर्जित है. इस आज्ञा के अनुसार कोई भी मनुष्य यदि परमेश्वर के नाम से कसम खाये तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

5. यदि हमारा हाँ का हाँ और ना का ना नहीं होता है और जो हमने बोला है उसके विपरीत करते हैं अर्थात अपनी जुबान नहीं रखते हैं तो यह परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेना हुआ.

6. यदि कोई मुँह से तो आराधना करता है परन्तु उसका मन परमेश्वर से दूर है तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ ले रहा है.



7. यदि कोई अपने कार्यस्थल में काम चोरी करे तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

8. यदि कोई परमेश्वर के वचन की गलत व्याख्या करे तो वह परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

9. यदि कोई आराधना के नाम पे बाइबल के विपरीत गीत गाये तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

10. यदि कोई झूठा प्रचारक परमेश्वर के नाम पर लोगों से पैसा लेता है तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

11. यदि कोई बाहर से कुछ और अंदर से कुछ अर्थात पाखंडी हो तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

12. यदि कोई चर्च में ऐसे पद पर है जिसके वो योग्य नहीं है तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

13. यदि कोई बिना सोचे-समझे बिना गंभीरता के परमेश्वर का नाम ले तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

14. यदि कोई परमेश्वर के नाम को गाली, गुस्सा, आश्चर्य, वासना, पापमयी आनंद आदि को व्यक्त करने के लिए ले तो वह परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

15. यदि कोई बिना सोचे समझे अय्यो प्रभु, ओह माय गॉड, ओह गॉड, ओह गॉड, दिस इस सो डर्टी आदि कहे, तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

16. यदि कोई पति अपने पति से प्यार ना करें और यदि कोई पत्नी अपने पति के अधीन ना रहे तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेते हैं.

17. यदि कोई मसीही अपने उठने-बैठने, चलने फिरने, पहनावे में या बात करने में कोई भी अश्लील हरकत करे या उसकी और संकेत भी करे तो वो परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेता है.

मैंने कुछ परिस्थितिया आपको समझाने के लिए ऊपर बताई है, लेकिन ये समाप्त नहीं हुईं. ये आज्ञा हमारे समस्त जीवन को अपने अंदर समाहित कर लेती है. जीवन में कुछ भी पाप किया तो ये इस आज्ञा का उल्लंघन है.

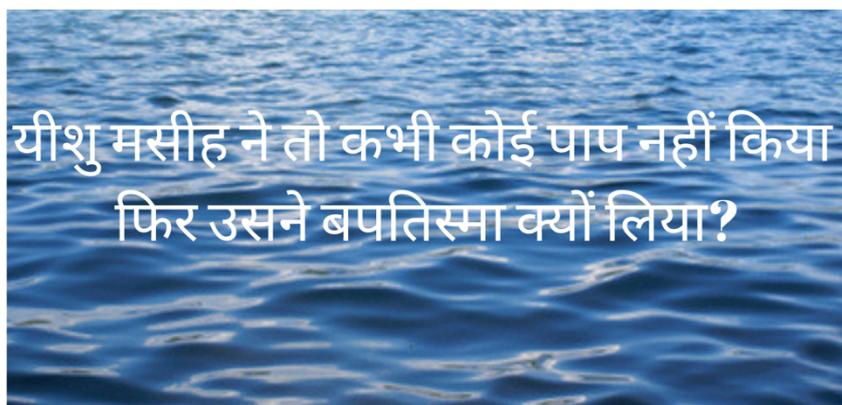
परमेश्वर का नाम कैसे ले?

ऊपर लिखी हुई चीज़ों का उल्टा करके.

ध्यान रखें यीशु मसीह ने जब प्रार्थना करना सिखाया तो पहली बात यही सिखाई: “तेरा नाम पवित्र माना जाये.” तो हम जो भी कहें या करें सिर्फ और सिर्फ परमेश्वर की महिमा के लिए करें और उसी में ये आज्ञा पूरी होगी.

Chapter 4: प्रश्न: यीशु मसीह ने तो कभी कोई पाप नहीं किया फिर उसने बपतिस्मा क्यों लिया? और जब यूहन्ना ने मना किया तो उसने क्यों कहा की सारी धार्मिकता को पूरा होने के लिए ऐसा ही होने दे. यीशु मसीह कौनसी धार्मिकता पूरी कर रहा था?

उत्तर: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बपतिस्मा पश्चाताप का बपतिस्मा था. जो अपने पापों से मन फिराता था और धार्मिकता से जीने की इच्छा ज़ाहिर करता था उसको यूहन्ना पानी में मन फिराव का बपतिस्मा देता था **यीशु मसीह ने कभी कोई पाप नहीं किया**, ना ही कर सकता था, क्योंकि वो तो शरीर में स्वयं **पवित्र पवित्र पवित्र परमेश्वर** था. वो तो पृथ्वी पर हमारी धार्मिकता बनने आया था. फिर क्यों उसने वो बपतिस्मा लिया? यीशु मसीह ने खुद उत्तर दिया- सारी धार्मिकता को पूरी करने के लिए. भाई, वो कौनसी धार्मिकता पूरी कर रहा था?



इसका उत्तर जानने के लिए हमें एक तथ्य को समझना होगा- **उद्धार हमारे कर्मों से नहीं होता लेकिन यीशु मसीह के कर्मों से होता है.** कौनसे कर्म? यीशु मसीह के जन्म लेने से क्रूस पर मरने तक के सारे कर्मों के द्वारा. जी हाँ, यीशु मसीह ने हमारा उद्धार करने के लिए सिर्फ अपनी जान ही नहीं दी, वो हमारे लिए जिया भी. याद कीजिये पापों की क्षमा के लिए कैसा मेमना चाहिए था? निष्कलंक मेमना. यीशु मसीह व्यवस्था के अधीन जन्मा था ताकि **हम जो व्यवस्था की अधीनता में शापित हैं, उसकी आज्ञाकारिता के द्वारा उद्धार पाए:**

**(गलातियों 4:4-5)**

4 “परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।

5 ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। “

हम लोग व्यवस्था पर खरे नहीं उतरे थे, इसलिए यीशु मसीह ने हमारे स्थान पर एक विकल्प के तौर पर व्यवस्था को पूरा किया ठीक वैसे ही जैसे वो हमारे स्थान पर विकल्प के तौर पर मरा , ताकि

हमारा उद्धार हो सके. अब आप समझो कि यीशु मसीह हमको धर्मी ठहराने के लिए खाली मारा ही नहीं पर जिया भी? एक बात गौर करने की है कि यीशु मसीह व्यवस्था के अधीन स्वयं के खातिर नहीं हुआ बल्कि हमारे खातिर हुआ. सरल भाषा में यीशु मसीह व्यवस्था का पालन खुद को धर्मी बनाने के लिए नहीं परन्तु हमें धर्मी बनाने के लिए कर रहा था. इसको और स्पष्ट करने के लिए कुछ और आयातों को भी देखिये:

**(रोमियों 5:19)**

*“क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।”*

इस आयत का मतलब है कि आदम की अवज्ञाकारिता के कारण सारी मानव जाती अधर्मी या पापी ठहरी, और दूसरे आदम अर्थात् यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के द्वारा सब विश्वास करने वाले लोग धर्मी ठहरेंगे. इस आयत से भी स्पष्ट हो जाता है कि यीशु मसीह हमारे खातिर व्यवस्था का देने वाला और व्यवस्था से ऊपर होने के बावजूद भी मनुष्य रूप में आकर व्यवस्था मान रहा था या आज्ञापालन कर रहा था.

**(इब्रानियों 2:17)**

*“इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने, जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वास योग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे।”*

इस आयत से भी स्पष्ट हो जाता है कि यीशु मसीह अपने भाइयों से एकाकार करने या उनके समरूप होने के लिए भी आज्ञा पालन कर रहा था ताकि हर बात में खरा उतर के अंत में उनके पापों का प्रायश्चित्त कर सके.

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला परमेश्वर की ओर से आया हुआ पुराने नियम का आखरी भविष्यवक्ता था . यदि यीशु मसीह बपतिस्मा नहीं लेता तो परमेश्वर की अवज्ञा होती परन्तु यीशु मसीह को तो हमारे लिए सम्पूर्ण व्यवस्था और आज्ञाओं का पालन करना था, इसलिए उसने बपतिस्मा लिया.

यीशु मसीह का धन्यवाद हो कि उसने हमारे लिए सारी धार्मिकता को पूरा किया ताकि हम उसके द्वारा उद्धार पा सकें!!!

## Chapter 5: The Doctrine of Limited Atonement सीमित प्रायश्चित्त की शिक्षा/सिद्धांतः

इस शिक्षा का अर्थ है की यीशु मसीह ने क्रूस पर सबकी सजा नहीं भोगी; वो सिर्फ कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही मरा. यदि सब के लिए मरता तो कोई भी नरक नहीं जाता. क्या परमेश्वर यीशु मसीह को किसी पापी का दंड देकर वापस उस पापी को नरक में डाल सकता है? नहीं? परमेश्वर अन्यायी नहीं. यीशु मसीह सिर्फ कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही मरा.

हम सब जानते हैं की यदि परमेश्वर अपने पुत्र को भेज कर हम में से किसी को नहीं बचाता और सम्पूर्ण मानव जाती को नरक में दंड देता तो भी वो पूरी तरह धर्मी होता, क्योंकि हम इसी योग्य है.

यदि आप में से कोई भी यह सोचता है की परमेश्वर को हमे उद्धार का एक मौका तो देना ही पड़ेगा, तो वह परमेश्वर के गॉस्पेल और अनुग्रह से बहुत दूर है. हमको यह भी समझना होगा की परमेश्वर यदि अपना बेटा नहीं देता तो भी वह उतना ही अर्थात अनंत प्रेमी रहता. बस एक चीज नहीं हो पाती- उसके प्रेम और अनुग्रह का प्रदर्शन नहीं हो पाता. परमेश्वर ने अपने प्रेम और अनुग्रह की प्रशंसा और महिमा के लिए कुछ लोगों को बचाना चुना और कुछ को अपने न्याय और क्रोध की प्रशंसा और महिमा के लिए नरक जाने के लिए छोड़ दिया. हमे यह समझना है की जो चुने हुए लोग बच रहें हैं उनको उनके कर्मों का फल नहीं मिल रहा; उनको अनुग्रह मिल रहा है. जो नरक जा रहें हैं उनको न्याय अर्थात अपने कर्मों का फल मिल रहा है

. अन्याय किसी को नहीं मिल रहा. तो सवाल यह नहीं की परमेश्वर कुछ ही लोगों को क्यों बचा रहा है; सबको क्यों नहीं. सवाल यह है की परमेश्वर किसी को भी क्यों बचा रहा है.

(हम जानते हैं की आपके बहुत सारे सवाल होंगे इस शिक्षा पर, लेकिन हम बड़े ही धैर्य के साथ आपके प्रश्नों का उत्तर देना चाहते हैं. कृपया हम से संपर्क कीजिये.)

इस शिक्षा या सिद्धांत को हम बाइबल की हर किताब में बहुतायात और स्पष्टता के साथ देख सकते हैं. उनमे से कुछ साक्षी आयतें (prooftexts) हम नीचे दे रहें हैं.

Jn 10:14-18



I am the good shepherd. I know my own and my own know me, 15 just as the Father knows me and I know the Father; and I lay down my life for the sheep. 16 And I have other sheep that are not of this fold. I must bring them also, and they will listen to my voice. So there will be one flock, one shepherd.

14. अच्छा चरवाहा मैं हूँ; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूँ।

15. इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ।

16. और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।

17. पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूँ, कि उसे फिर ले लूँ।

18. कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूँ: मुझे उसके देने का अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है॥

[Jn 10:16](#)

I have other sheep that are not of this sheep pen. I must bring them also. They too will listen to my voice, and there shall be one flock and one shepherd.

16. और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।

[Jn 11:51-52](#)

He did not say this of his own accord, but being high priest that year he prophesied that Jesus would die for the nation, 52 and not for the nation only, but also to gather into one the children of God who are scattered abroad.

51. यह बात उस ने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वणी की, कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा।

52. और न केवल उस जाति के लिये, वरन इसलिये भी, कि परमेश्वर की तित्तर बित्तर सन्तानों को एक कर दे।

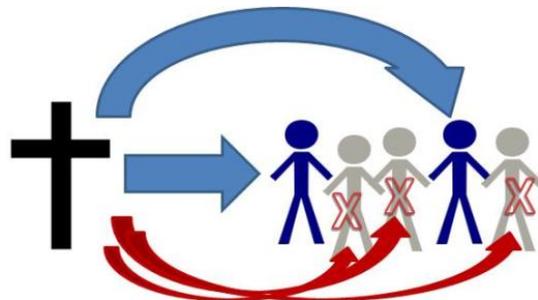
[Jn 17:1-2](#)

When Jesus had spoken these words, he lifted up his eyes to heaven, and said, "Father, the hour has come; glorify your Son that the Son may glorify you, 2 since you have given him authority over all flesh, to give eternal life to all whom you have given him.

1. यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।

2. क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।

Jn 17:6-10



“I have manifested your name to the people whom you gave me out of the world. Yours they were, and you gave them to me, and they have kept your word. 7 Now they know that everything that you have given me is from you. 8 For I have given them the words that you gave me, and they have received them and have come to know in truth that I came from you; and they have believed that you sent me. 9 I am praying for them. I am not praying for the world but for those whom you have given me, for they are yours. 10 All mine are yours, and yours are mine, and I am glorified in them.

जगत से जिन मनुष्यों को तूने मुझे दिया, मैंने उन्हें तेरे नाम का बोध कराया है। वे लोग तेरे थे किन्तु तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया।

**17:7**

अब वे जानते हैं कि हर वह वस्तु जो तूने मुझे दी है, वह तुझ ही से आती है।

**17:8**

मैंने उन्हें वे ही उपदेश दिये हैं जो तूने मुझे दिये थे और उन्होंने उनको ग्रहण किया। वे निश्चयपूर्वक जानते हैं कि मैं तुझसे ही आया हूँ। और उन्हें विश्वास हो गया है कि तूने मुझे भेजा है।

**17:9**

मैं उनके लिये प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं जगत के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिए कर रहा हूँ जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं।

**17:10**

वह सब कुछ जो मेरा है, वह तेरा है और जो तेरा है, वह मेरा है। और मैंने उनके द्वारा महिमा पायी है।

## Jn 17:19-21

And for their sake I consecrate myself, that they also may be sanctified in truth. 20 “I do not ask for these only, but also for those who will believe in me through their word, 21 that they may all be one, just as you, Father, are in me, and I in you, that they also may be in us, so that the world may believe that you have sent me.

19. और उन के लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं।
20. मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों।
21. जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।

## John 17:24-26

Father, I desire that they also, whom you have given me, may be with me where I am, to see my glory that you have given me because you loved me before the foundation of the world. 25 O righteous Father, even though the world does not know you, I know you, and these know that you have sent me. 26 I made known to them your name, and I will continue to make it known, that the love with which you have loved me may be in them, and I in them.”

24. हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूँ, वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रखा।
25. हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा।
26. और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूँ।

## Lk 22:19-21



And he took bread, and when he had given thanks, he broke it and gave it to them, saying, "This is my body, which is given for you. Do this in remembrance of me." 20 And likewise the cup after they had eaten, saying, "This cup that is poured out for you is the new covenant in my blood.

19. फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उन को यह कहते हुए दी, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।

20. इसी रीति से उस ने बियारी के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया कि यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है।

#### Rom 8:31-34

What then shall we say to these things? If God is for us, who can be against us? 32 He who did not spare his own Son but gave him up for us all, how will he not also with him graciously give us all things? 33 Who shall bring any charge against God's elect? It is God who justifies. 34 Who is to condemn? Christ Jesus is the one who died—more than that, who was raised— who is at the right hand of God, who indeed is interceding for us.

31. सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

32. जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?

33. परमेश्वर के चुने हुआँ पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उन को धर्मी ठहराने वाला है।

34. फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया वरन मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।

#### Eph 5:25-27

Husbands, love your wives, as Christ loved the church and gave himself up for her, 26 that he might sanctify her, having cleansed her by the washing of water with the word, 27 so that he might present the church to himself in splendor, without spot or wrinkle or any such thing, that she might be holy and without blemish.

25. हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया।

26. कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए।

27. और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बना कर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो।

1Cor 15:3

For I delivered to you as of first importance what I also received: that Christ died for our sins in accordance with the Scriptures,

3. इसी कारण मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया।

Heb 7:25-27

25 Consequently, he is able to save to the uttermost those who draw near to God through him, since he always lives to make intercession for them. 26 For it was indeed fitting that we should have such a high priest, holy, innocent, unstained, separated from sinners, and exalted above the heavens. 27 He has no need, like those high priests, to offer sacrifices daily, first for his own sins and then for those of the people, since he did this once for all when he offered up himself.

25. इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उन के लिये बिनती करने को सर्वदा जीवित है।

26. सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो।

27. और उन महायाजकों की नाई उसे आवश्यक नहीं कि प्रति दिन पहिले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिये बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उस ने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया।

Heb 9:11-12



But when Christ appeared as a high priest of the good things that have come, then through the greater and more perfect tent ( not made with hands, that is, not of this creation) 12 he entered once for all into the holy places, not by means of the blood of goats and calves but by means of his own blood, thus securing an eternal redemption.

11. परन्तु जब मसीह आने वाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उस ने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात् इस सृष्टि का नहीं।

12. और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।

Heb 9:15

Therefore he is the mediator of a new covenant, so that those who are called may receive the promised eternal inheritance, since a death has occurred that redeems them from the transgressions committed under the first covenant.

15. और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें।

Heb 9:-28

28 so Christ, having been offered once to bear the sins of many, will appear a second time, not to deal with sin but to save those who are eagerly waiting for him.

28. वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बात जोहते हैं, उन के उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा।।

1Pet 3:18

For Christ also suffered once for sins, the righteous for the unrighteous, that he might bring us[9] to God, being put to death in the flesh but made alive in the spirit, 19 in which he went and proclaimed to the spirits in prison, 20 because they formerly did not obey, when God's patience waited in the days of Noah, while the ark was being prepared, in which a few, that is, eight persons, were brought safely through water.

क्योंकि मसीह ने भी हमारे पापों के लिए दुःख उठाया। अर्थात् वह जो निर्दोष था हम पापियों के लिये एक बार मर गया कि हमें परमेश्वर के समीप ले जाये। शरीर के भाव से तो वह मारा गया पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।

Rev 5:9-10

And they sang a new song, saying, "Worthy are you to take the scroll and to open its seals, for you were slain, and by your blood you ransomed people for God from every tribe and language and people and nation, 10 and you have made them a kingdom and priests to our God, and they shall reign on the earth."

9. और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध हो कर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है।

10. और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।

Rev 13:7-8

Also it was allowed to make war on the saints and to conquer them. And authority was given it over every tribe and people and language and nation, 8 and all who dwell on earth will worship it, everyone whose name has not been written before the foundation of the world in the book of life of the Lamb who was slain

7. और उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल, और लोग, और भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया।

8. और पृथ्वी के वे सब रहने वाले जिन के नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।

Rom 5:9-10

Since, therefore, we have now been justified by his blood, much more shall we be saved by him from the wrath of God. 10 For if while we were enemies we were reconciled to God by the death of his Son, much more, now that we are reconciled, shall we be saved by his life.

9. सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?

10. क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?

Isa 53:6



All we like sheep have gone astray; we have turned—every one—to his own way; and the LORD has laid on him the iniquity of us all.

6. हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।।

Isa 53:

12 Therefore I will divide him a portion with the many, and he shall divide the spoil with the strong, because he poured out his soul to death and was numbered with the transgressors; yet he bore the sin of many, and makes intercession for the transgressors.

12. इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है॥

2Cor 5:21 For our sake he made him to be sin who knew no sin, so that in him we might become the righteousness of God.

21. जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं॥

Heb 9:25-28

28 so Christ, having been offered once to bear the sins of many, will appear a second time, not to deal with sin but to save those who are eagerly waiting for him.

25. यह नहीं कि वह अपने आप को बार बार चढ़ाए, जैसा कि महायाजक प्रति वर्ष दूसरे का लोहू लिये पवित्रस्थान में प्रवेश किया करता है।

26. नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उस को बार बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।

27. और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।

28. वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बात जोहते हैं, उन के उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा॥

Heb 13:11-12

For the bodies of those animals whose blood is brought into the holy places by the high priest as a sacrifice for sin are burned outside the camp. 12 So Jesus also suffered outside the gate in order to sanctify the people through his own blood.

11. क्योंकि जिन पशुओं का लोहू महायाजक पाप-बलि के लिये पवित्र स्थान में ले जाता है, उन की देह छावनी के बाहर जलाई जाती है।

12. इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दुख उठाया।

1Pet 2:24

He himself bore our sins in his body on the tree, that we might die to sin and live to righteousness. By his wounds you have been healed.

<https://logosinhindi.com/>

24. वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर के धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।

1Pet 3:18-20

For Christ also suffered once for sins, the righteous for the unrighteous, that he might bring us to God,

18. इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधमियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।

19. उसी में उस ने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया।

20. जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धर कर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए।

1Ch 17:20-21



There is none like you, O LORD, and there is no God besides you, according to all that we have heard with our ears. 21 And who is like your people Israel, the one nation on earth whom God went to redeem to be his people, making for yourself a name for great and awesome things, in driving out nations before your people whom you redeemed from Egypt?

20. हे यहोवा! जो कुछ हम ने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं, और न तुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है।

21. फिर तेरी प्रजा इस्राएल के भी तुल्य कौन है? वह तो पृथ्वी भर में एक ही जाति है, उसे परमेश्वर ने जा कर अपनी निज प्रजा करने को छोड़ाया, इसलिये कि तू बड़े और डरावने काम कर के अपना नाम करे, और अपनी प्रजा के साम्हने से जो तू ने मिस्र से छोड़ा ली थी, जाति जाति के लोगों को निकाल दे।

Isa 53:10-11

Yet it was the will of the LORD to crush him; he has put him to grief; when his soul makes an offering for guilt, he shall see his offspring; he shall prolong his days; the will of the LORD shall prosper in his hand. 11 Out of the anguish of his soul he shall see and be satisfied; by his knowledge shall the righteous one, my servant, make many to be accounted righteous, and he shall bear their iniquities.

10. तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।

11. वह अपने प्राणों का दुःख उठा कर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा।

Mt 1:21

She will bear a son, and you shall call his name Jesus, for he will save his people from their sins.

Mt 22:14

For many are called, but few are chosen.

“क्योंकि बुलाये तो बहुत गये हैं पर चुने हुए थोड़े से हैं।”

Jn 6:37-40

All that the Father gives me will come to me, and whoever comes to me I will never cast out. 38 For I have come down from heaven, not to do my own will but the will of him who sent me. 39 And this is the will of him who sent me, that I should lose nothing of all that he has given me, but raise it up on the last day. 40 For this is the will of my Father, that everyone who looks on the Son and believes in him should have eternal life, and I will raise him up on the last day.”

37. जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।

38. क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ।

39. और मेरे भेजने वाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ।

40. क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।

Jn 10:3-4

To him the gatekeeper opens. The sheep hear his voice, and he calls his own sheep by name and leads them out. 4 When he has brought out all his own, he goes before them, and the sheep follow him, for they know his voice.

3. उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।

4. और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उन के आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।

Jn 10:11

I am the good shepherd. The good shepherd lays down his life for the sheep.

11. अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।

Acts 20:28

Pay careful attention to yourselves and to all the flock, in which the Holy Spirit has made you overseers, to care for the church of God, which he obtained with his own blood.

28. क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बनाने से न झिझका।

Heb 9:15

Therefore he is the mediator of a new covenant, so that those who are called may receive the promised eternal inheritance, since a death has occurred that redeems them from the transgressions committed under the first covenant.

15. और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें।

1Pet 2:7-9

So the honor is for you who believe, but for those who do not believe, "The stone that the builders rejected has become the cornerstone," 8 and "A stone of stumbling, and a rock of offense." They stumble because they disobey the word, as they were destined to do. 9 But you are a chosen race, a royal priesthood, a holy nation, a people for his own possession, that you may proclaim the excellencies of him who called you out of darkness into his marvelous light.

7. सो तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उन के लिये जिस पत्थर को राजमिस्त्रीयों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया।

8. और ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है: क्योंकि वे तो वचन को न मान कर ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे।

9. पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।

“For I have told him that I am about to judge his house forever for the iniquity which he knew, because his sons brought a curse on themselves and he did not rebuke them. 14 And therefore I have sworn to the house of Eli that the iniquity of Eli’s house shall not be atoned for by sacrifice or offering forever.”

The question is that if Jesus bore the sin of everyone who ever lived, then why is the house of Eli's sins never to be atoned for? (1 Sam. 3:13-14).

13. क्योंकि मैं तो उसको यह कहकर जाता चुका हूँ, कि मैं उस अधर्म का दण्ड जिसे वह जानता है सदा के लिये उसके घर का न्याय करूँगा, क्योंकि उसके पुत्र आप शापित हुए हैं, और उसने उन्हें नहीं रोका।

14. इस कारण मैं ने एली के घराने के विषय यह शपथ खाई, कि एली के घराने के अधर्म का प्रायश्चित न तो मेलबलि से कभी होगा, और न अन्नबलि से।